गीत मेरे स्वर तुम्हारे

दिनेश भ्रमर

साहित्य-संगम
मोतिहारी

प्रकाशक
साहित्य-संगम
मोतिहारी (बिहार)

मूल्य
दो रुपये पचास नये पैसे

मुद्रक
जीवन-शिक्षा मुद्रणालय,
गोलघर, वाराणसी

अपनी ओर से

भूमिका रूप में अपनी ओर से कुछ कहने की अनिवार्यता यद्यपि मैं स्वीकारता नहीं, तथापि इस आशंका से कि समालोचकों के मन में मेरे काव्य के प्रति भ्रमोत्पत्ति न हो, अस्तु, स्वीकारोक्ति के रूप में यह नीरस गद्य-खण्ड अकारण नहीं।

साहित्य की यह मान्यता रही है कि गीत आत्मानुभूति के प्रकाशक होते हैं, क्योंकि, कवि अपनी आत्मिक संवेदनाओं को ही गीति-छन्दों में सुनियोजित करता है। अतएव, गीति-काव्य में वैयक्तिक भावनाओं के प्रकाशन का पूर्ण अवसर गीतकार को सहज ही प्राप्त हो जाता है। मेरे अधिकांश गीत इस मान्यता से परे नहीं। परन्तु, अत्याधुनिक प्रयोगशील काव्य-युग में आधुनिकता के प्रति गीतकार का सचेष्ट होना वांछनीय-सा प्रतीत होता है। इस विचार की संपुष्टि के हेतु ही मेरे गीतों में भी यत्र-तत्र प्रयोगशील पंक्तियों का सृजन हुआ है। उस प्रयोगशीलता के कारण गीतात्मक परिवेश का विखंडन हुआ है अथवा उसके कारण सौन्दर्य की अभिवृद्धि हो सकी है, इसका निर्णय विद्वान् पाठकों पर निर्भर करता है। हाँ, अपनी अभिव्यक्तिगत स्पष्टता के कारण यदि उनमें कुछ रसवत्ता या अर्थवत्ता आ गयी हो तो मैं अपना श्रम सफल मानूँगा। कम से कम रस, अलंकार आदि के इस सर्वनाशी युग में रस की रक्षा तो हो सकी।

यह संकलन कुछ समय पूर्व ही आता। परन्तु, डा० हरिवंश राय बच्चन का आदेश कि 'फसल पकने पर बाजार में उतारो।' और, फिर कहूँ कि यह संकलन और विलम्ब से आता, लेकिन आचार्य

जानकी वल्लभ शास्त्री का मान्य परामर्श कि 'हरीतिमा का भी अपना महत्व होता है।' फिर, हरीतिमा और परिपक्वता का संयोग लिए यह संकलन आ गया।

स्वर्गीय नेपाली, आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री एवं बच्चन जी मेरे प्रेरणा-स्तम्भ रहे हैं। काव्य-गुरु श्री चन्द्रधर मिश्र जी तो मेरे प्रणम्य ही ठहरे। कवि मित्रों में सर्वश्री मुकुटबिहारी 'सरोज' (ग्वालियर) हरीशनिगम (उज्जैन) देवीप्रसाद राही (कानपुर) राजेन्द्रप्रसाद सिंह एवं रामचन्द्र 'चन्द्रभूषण' (बिहार) के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने अपने स्नेहपूर्ण विचारों से मुझे लाभान्वित किया है।

अग्रज श्री रमेशचन्द्र झा का अनुग्रह एवं भाई गणेश विशारद तथा पाण्डेय आशुतोष का सहज सुलभ साहचर्य भी मेरे लिए कम महत्त्वपूर्ण नहीं। बाल-साहित्य के कुशल शिल्पी श्री विष्णुकान्त पाण्डेय के प्रति आभार प्रदर्शन न करना उनके सहयोग एवं स्नेह की उपेक्षा ही होगी।

अन्ततः, नन्दिनी को अथोर प्यार, जिसे ये गीत बेहद प्यारे हैं।

—दिनेश भ्रमर

भारतीय संस्कृति के उन्नायक

एवं

हिन्दी-साहित्य के यशस्वी लेखक

श्री जगदीशचन्द्र माथुर आई० सी० एस०

को

सादर समर्पित

अनुक्रमणिका

पलकों की ओर

काली रातों के मूक इशारों पर क्यों अनजाने से हो तुम भटक रहे,
मेरे सपनों के पलने में आओ, अपनी पलकों की ओर तुम्हें दे दूँ।

कहते हो आँधी को जवाब दूँगा,
पर, पुरवैया में ही तुम सो जाते,
कहते हो, ढूढ़ निकालूँगा चन्दा,
लेकिन चकमक तारों में खो जाते,

भिक्षुक गीतों से हो कुछ माँग रहे, वे तो घायल हैं क्या तुमको देंगे,
मेरे दृग के दर्पण से कुछ माँगो तो मन का मुग्ध चकोर तुम्हें दे दूँ।

साँसों की पूँजी शेष हुई जाती,
पर गीतों की जागीर हमारी है,
सौतन सरगम है मार गई टोना,
फिर भी उनमें तासीर-खुमारी है,

तन से गरीब पर, मन का बड़ा अमीर मेरी बातों पर तो विश्वास करो,
है पास नहीं कुछ फिर भी अगर कहो, कल्पित सोने का मोर तुम्हें दे दूँ।

दुनिया की इन बदसूरत आँखों में,
मानो तो यह हर चीज पराई है,
धनवानों की ऊसर धरती पर कब ?
निर्धन गीतों की हुई सगाई है,

इस दुनिया के सब लोग पराए हैं, क्या आँकेंगे निर्धन गीतों के मोल,
मेरे मन की मूरत का हाथ गहो तो यश का अन्तिम छोर तुम्हें दे दूँ।

★

कविता का अवतरण

यदि कवि बनता नहीं भगीरथ, कविता का अवतरण न होता।

अगर पुजारी का उर कलुषित,
पूजा का उपकरण क्या करे,
सम्बोधन का बोध न हो तो,
करण और अधिकरण क्या करे,

नए सृजन के पीछे कोई निहित एक कारण होता है,
तन की शुद्धि; अशुद्धि न बनती तो मन का व्याकरण न होता।

नियति परीक्षक जब बन बैठी,
घोषित स्वयं परीक्षा-फल है,
उपवन को हो गया तपेदिक,
इसीलिए पीला पाटल है,

रुदन-हास्य के दो तारों पर जीवन की वीणा बजती है,
जीने का कुछ स्वाद न मिलता यदि जीवन में मरण न होता।

विश्व समझ लो रंगमंच है,
जीवन यहाँ एक नाटक है,
भाग्य-यवनिका गर्म यहाँ पर,
कर्म हमारा उद्घाटक है,

विधि के हर अभिनय के पीछे कोई भेद छुपा रहता है,
रावण का वध होता कैसे यदि सीता का हरण न होता।

★

चन्दन-फूलों से

चन्दन-फूलों से तुमने देव बहुत पूजे,
पूजो जीवित विश्वासों से इन्सानों को।

पूजो, इन्सानों के तप-त्याग, तपस्या को,
पूजो, निदान के लिए नवीन समस्या को,
आकुल जीवन की कली-कली मुसकाने दो,
युग की वीणा पर नयी रागिनी गाने दो,

मुर्दे पत्थर की भगवानी तो बहुत हुई,
पूजो युग-पथ के जीवित नए निशानों को।

इन्सानों को, जो नई राह दिखलाता है,
युग का, जग का, इति-अथ का भाग्य विधाता है,
जिनके घर में सूरज उजियारा भरता है,
जिनके चरणों को सिन्धु पखारा करता है,

चलने दो मानव के चंचल गतिशील चरण,
चरणों की आहट से बाँधो तूफानों को।

दिशि-दिशि में भर दो नए प्राण, नव अरुणाई,
फिर अंग-अंग, नव-नव उमंग, नव अँगड़ाई,
भर दो नूतन आलोक मनुज की आँखों में,
नीले नभ का विस्तार हृदय की पाँखों में,

हर पतझर को मधुमास चुनौती देता है,
तुम चमन बना दो, मरघट को, सुनसानों को।

★

गीतकार

गीतकार गीतों को छंदों में लय कर दो।
तन के उपसर्गों में मन का प्रत्यय भर दो॥

क्रियाहीन संज्ञाएँ,
सन्धि बिना स्वर-व्यंजन,
मन के संबंधों को—
मिला नहीं संबोधन,

अन्तर के द्वन्द्वों को तू समास नत्र कर दो।
तन के उपसर्गों में मन का प्रत्यय भर दो॥

कर्त्ता है सीख रहा,
भाषा का शब्द-ज्ञान,
करणों, अधिकरणों को–
जाने क्या सम्प्रदान,

बिकते जो सर्वनाम उनको अव्यय कर दो।
तन के उपसर्गों में मन का प्रत्यय भर दो॥

नश्वर हैं हर उद्देश्य,
नश्वर हैं सकल कर्म,
क्षणभंगुर जीवन में,
शाश्वत बस, काव्य-धर्म,

मन के हर अक्षर को छूकर अक्षय कर दो।
तन के उपसर्गों में मन का प्रत्यय भर दो॥

★

छन्द की साधना

रात का अधजला दीप कहता, स्नेह की अर्चना कम नहीं है,
अक्षरों का नयन कह रहा है, छंद की साधना कम नहीं है।

सृष्टि का हर चमन है उदासा,
इसलिए गुनगुनाता नहीं हूँ,
लुट न जाए धरोहर सुरों की,
इसलिए गीत गाता नहीं हूँ,

प्राण का एकतारा वियोगी, रागिनी बन गई है वियोगिन,
गीत वाला गगन कह रहा है, गीत की वंदना कम नहीं है।

दृष्टि की रेख सचमुच बड़ी है,
रूप का वृत्त उससे बड़ा है,
कोण मन का सहज सिद्ध करता,
हर नियम हर तरह से कड़ा है,

ज्ञान का है गरुड़ पंख खोले, बुद्धि की सोनजूही खिली है,
गंधवाला पवन कह रहा है, भक्ति की भावना कम नहीं है।

रसकलश ढालता है रहा जो,
वह गगन तो हमारा रहा है,
पत्थरों को सँजीवन पिला दे,
वह चरन तो हमारा रहा है,

प्राण के देवता को समर्पित अश्रु के दो तरल बिन्दु खारे,
मेघवाला नयन कह रहा है, अश्रु-आराधना कम नहीं है।

★

प्राण का पाहुन

आज मन के द्वार पर इतने कड़े पहरे लगे हैं,
प्राण का पाहुन न आकर लौट जाए।

मन्दिरों में आरती जलती रहे,
इसके लिए तो एक अंगारा बहुत है,
और, पंथी के लिए इस निविड़ तम में,
झिलमिलाता एक भी तारा बहुत है,

आज का मौसम न जाने क्यों उदासा लग रहा है,
स्नेह का सावन न आकर लौट जाए।

गीत की गंगा उतारो तुम धरा पर,
रह न जाए साधना की साध प्यासी,
प्राण के दीपक जले कितने डगर में,
आ सकी है तब कहीं यह पूर्णमासी,

तम, किरण की आत्मा का आज शासक बन गया है,
ज्योति की दुलहन न आकर लौट जाए।

मृत्यु का आसव सुधा कह कर पिलाना,
यह नहीं सूचक किसी अनुरक्ति का है,
जनम का हूँ नास्तिक पर, जानता हूँ,
ज्ञान से भी मूल्य ज्यादा भक्ति का है,

उम्र के गतिशील पग में भी थकन कुछ आ रही है,
गीत का बचपन न आकर लौट जाए।

★

आओ मन के मीत आज हम मिल कर ज्योति-पर्व रच डालें,
पहली ज्योति तुम्हारी होगी, शेष किरन मुझसे ले लेना।

मैं बातों का निर्धन कवि हूँ,
तुम प्रतिभा की राजकुमारी,
तेरे हैं हर स्वप्न विवाहित,
मेरी है हर साध कुँवारी,

मेरी-तेरी राह भिन्न है, फिर भी मिलन सहज संभव है।
मिलने की तिथि तेरी होगी, महामिलन मुझसे ले लेना।

तुम हो एक कहानी पूरी,
मैं हूँ एक अधूरा नाटक,
अब है यही समस्या सम्मुख,
कौन बने इसका उद्घाटक,

मेरी चिन्ता छोड़ आज अपनी जीवन-कविता रच डालो,
छन्द तुम्हारे मन के होंगे, शब्द-चयन मुझसे ले लेना।

यह मत सोचो अश्रु मूक हैं,
उनकी भी अपनी भाषा है,
तेरे बिम्ब-विन्दु पाने को,
इनका रोम-रोम प्यासा है,

गीतों की सौगन्ध उठाकर आज यही कहने आया हूँ,
आश्वासन यदि तेरा हो तो आमंत्रण मुझसे ले लेना।

★

काव्य की कीमत

शाप तेरा क्या मिला वरदान-सा,
आज सपनों की सगाई हो गई।

मुँहलगी यह प्यार बिल्कुल बेखबर
आज मेरा स्नेह-सावन पास है,
वह छली पतझर विवश लाचार है,
क्योंकि, छाया प्रान में मधुमास है,

फागुनी तेरा निमंत्रण क्या मिला,
आज सावन की विदाई हो गई।

वे किरन-कंगन तुम्हारे क्या करें,
जबकि छाया मावसी अँधियार है,
नूपुरों के चिर चपल स्वर कैद हैं,
रो रहा हर कंठ का मल्हार है,

किन्तु, तेरे इन्द्रधनुषी रंग को,
हर अमावस छू जुन्हाई हो गई।

लेखनी पर तामसी जादू चढ़ा,
अस्तु, उसकी काँपती आवाज़ है,
सूद का दिन-दिन तकाज़ा बढ़ रहा,
मूलधन के साथ बैठा ब्याज है,

अक्षरों के रत्न तुमने जड़ दिए,
काव्य की कीमत सवाई हो गई।

★

तरुवर मत कहना

जो न छाँह दे सके राह के थके पथिक को,
सुनो, बटोही ! उसे कभी तरुवर मत कहना ।

शासन के आदेशों पर यदि पले सभ्यता,
कैसे कह दूँ संस्कृति का अपमान न होगा,
जहाँ बादलों पर पहरा बिजली करती हो,
कैसे कह दूँ वह भूतल वीरान न होगा,

जो वसन्त ऋतु की अगवानी का आमुख है,
सुनो, पाठको ! उसे कभी पतझर मत कहना ।

अगर 'आत्मा' सचमुच एकाकार हो गई,
फिर तत्त्वों का आपस में यह चिरवियोग क्या ?
जिसकी मुट्ठी में सागर का कोष सुरक्षित,
उससे कुछ निर्बल लहरों का असहयोग क्या ?

जो प्राणों के रोहित को तक्षक बन डँस ले,
सुनो, साधको ! उसे कभी ईश्वर मत कहना ।

सच है उस ज्योतिषी-सिन्धु का गर्व निरर्थक,
जो अनब्याही बूंदों की तकदीर न जाने,
वह नाविक क्या ब्याह रचायेगा साहिल से,
जो हर मौसम के रुख की तासीर न जाने,

जो जड़ चट्टानों के भय से पाँव मोड़ ले,
ओ अभियानी! सुनो, उसे निर्झर मत कहना।

★

परिचय हो जाये

अगर तुम्हारे नयनों में सावन छाये तो छा जाने दो,
संभव है मेरे प्यासे मन का उससे परिचय हो जाये।

माना रूप अपरिचित तेरा,
पर, परिचित अन्तर-त्रिभुवन है,
तेरी मुखर मुखाकृति पर थिर,
मेरा सारा गीत-गगन है,

तेरे अनब्याहे अधरों पर गीत उभरते हैं तो उभरें,
संभव है उन गीतों से मेरा जीवन मधुमय हो जाये।

लजवंती संध्या से सचमुच,
तेरे मुग्ध नयन अलसाए,
सूरज के वियोग में रजनी,
रात-रात भर नीर बहाए,

अगर वियोगिन रजनी के आँसू से धरती भींग चले तो,
संभव है मेरे मन का सूखा तरुवर किसलय हो जाये।

तेरा रूप निहारा जब से,
भटक रहा हूँ बनजारों-सा,
इतना दर्द पिलाया तूने,
टूट गया नभ के तारों-सा,

अगर प्राण के तत्त्व मिल रहे हों तो उनको मिल जाने दो,
संभव है उस सत्य-सुधा में इस असत्य का लय हो जाये ।

★

गीतों का तप

गीत लिखने की तपस्या पूर्ण होगी उस दिवस,
जब गीत में लिखने लगूं इन्सान की तकदीर।

तुम हमारे रूप को मत हेय समझो,
सूर्य-सा तम का गरल इसने पिया है,
रोज मंजिल चरण इसके चूमती है,
स्वयं इसने धूल को परिमल किया है,

गीत गाने को हमारा कंठ यह मजबूर होगा,
यदि न खुल जाये बँधे हर हाथ की जंजीर।

मौत का अब मर्सिया स्वर तुम न छेड़ो,
हर गली में जिन्दगी गाने लगी है,
तुम न फेंको धूल फूलों की कबर पर,
जबकि पतझर से महक आने लगी है,

है जहाँ पर बाग का बागी बना खुद बागवाँ ही,
फिर कहो, कैसे बचेगी फूल की जागीर।

बादलों का मोल क्या होगा बताओ,
रह गई यदि साधना की साध प्यासी,
दीप का जलना सरासर ढोंग होगा,
यदि अमावस बन न जाये पूर्णमासी,

साधुता को पारिभाषित क्या करेगा वह अकिंचन,
जो न अब तक जान पाया हो पराई पीर।

★

नयनों की डोरी से

मेरे गीतों की कसम तुम्हें सौ बार,
मत बाँध मुझे नयनों की डोरी से।

आँचल की पाल हटा दी जो तूने,
मन की झाँझर नैया हो गई हताश,
हर पाँव हुए जाते थकान से चूर,
है थकी जा रही जीवन की हर साँस,

प्राणों के सरगम वैसे ही घायल,
मत छेड़ उन्हें सुधियों की लोरी से।

लोचन की कोर सजल भर-भर आती,
जब पलकों पर होता सुधि का नर्तन,
हर सुबह शाम की गोदी में पलती,
जग का कैसा यह निष्ठुर परिवर्तन,

प्राणों का मिलन मधुर कितना होता,
यह भेद पूछ नयनों की चोरी से।

मेरे घायल गीतों पर मुहर लगी,
गिरवी जीवन के सारे साज, सिंगार,
जीवन का मोल नहीं इस दुनिया में,
ठिकरों पर बिकता यहाँ हृदय का प्यार,

चंदा-सा इस जग का तन-मन काला,
जो सदा दूर ही रहा चकोरी से।

★

तुम सुहागिन साँस को शूली चढ़ा दो,
पर, तुम्हारे रूप का दर्पण न दूँगा।

मैं सदा प्यासा रहूँ, मंजूर मुझको,
गीत मेरे हाट में नीलाम कर दो,
आँख में पहरा बिठाकर आँसुओं का,
तुम अजानी नींद में कुहराम भर दो,

तुम अधर के मुसकुराते गीत लेलो,
पर, नयन का शबनमी आँगन न दूँगा।

तुम कहो तो इस गगन की सेज दे दूँ,
तुम कहो तो आँख में भर दूँ जुन्हाई,
तुम कहो तो प्रीत का काजल लुटाकर,
जा अछूती प्यास से कर लूँ सगाई,

गीत का पनघट तुम्हें सौ बार अर्पित,
पर, सलोने प्रीत का मधुवन न दूँगा।

आँधियों को ला बसा दो इस नयन में,
हो सके तो होठ पर अंगार धर दो,
गीत को बेड़ी पिन्हाकर पायलों की,
जिन्दगी का आज उपसंहार कर दो,

तुम जवानी को भले चूनर पिन्हाओ,
पर, सरीखा वह हठी बचपन न दूँगा।

★

वरदान बना लूँ

मेरे अभिशापित मन का यदि सहयोगी तुम-सा कोई हो,
अपने सारे अभिशापों को क्षणभर में वरदान बना लूँ।

निरवंशी हैं स्वप्न सभी,
तेरे वियोग में मेरे मन के,
बिन पाए आशीष तुम्हारा,
कैसे खिले सुमन आँगन के,

बिना द्वैत के मानव जीवन, सदा रहा है यहाँ अपूरन,
अगर तुम मिलो तो पल में जीवन-मरु को उद्यान बना लूँ।

जैसे स्वर के बिना अधूरा,
रहता है जीवन कोयल का,
या जल के अभाव में रहता—
है अपूर्ण जीवन शतदल का,

वैसे ही हम पूर्ण नहीं हैं, यह जीवन सम्पूर्ण नहीं है,
सहमति हो तो कहो, तुम्हें मनु की पहली सन्तान बना लूँ,

तुम हो उपसंहार हमारे—
जीवन की अनबुझी प्यास का,
तेरे बिन मैं एक पात्र हूँ,
किसी अधूरे उपन्यास का,

प्राण-कथा के तुम जीवन हो, अगर तुम्हारा आश्वासन हो,
सच कहता हूँ, अपने जीवन को कल्पित सोपान बना लूँ ।

★

स्वर न छीनना

जीवन का सर्वस्व हरण कर मुझे बना दो महा अकिंचन,
लेकिन एक प्रार्थना सुन लो, गीतों का यह स्वर न छीनना।

गीतों का आशय होता है,
आत्म-भाव का सहज प्रकाशन,
वहाँ कल्पना मुक्त विचरती,
वहाँ नहीं होता अनुशासन,

जीवन की सुख-सुविधाओं के विविध पक्ष से वंचित कर दो,
लेकिन एक याचना सुन लो, सेवा का अवसर न छीनना।

सुखमय पृष्ठ समर्पित तुमको,
दुःख का परिच्छेद मेरा है,
सुख की हर उपनिषद तुम्हारी,
दुखमय अनुच्छेद मेरा है,

अपनी इस अतिशय पीड़ा की मुझको नहीं जरा भी चिन्ता,
यही बहुत आभार रहेगा, आँसू का निर्झर न छीनना।

दुख के पहले सुख अपना लूँ,
वह मुझको स्वीकार नहीं है,
जो हर दर्द सहन कर लेता,
वह धरती का भार नहीं है,

संकट के तप में तपकर ही जीवन-स्वर्ण खरा होता है,
बन मधुमास कभी महकूँगा, जीवन का पतझर न छीनना।

★

कंचन का विश्वास क्या

जो पीतल के मोल बिके बाजारों में,
तुम्हीं कहो, उस कंचन का विश्वास क्या ?

वह बुजदिल उपवन मधुऋतु की बात करे,
जिसका रूप–नगर पतझर का डेरा है,
विश्वासों की सीमा पार करूँ कैसे–
दुविधा की बनजारिन डाले घेरा है,

लहू पी रही धूल जहाँ तालियाँ बजा,
तुम्हीं कहो, फिर चंदन का विश्वास क्या ?

दीवट धरे दीप की बाती जलती है,
फिर भी क्वाँरी ज्योति छिपी अँधियारे में,
हर उपवन का माली रिश्वतखोर बना,
उजड़ रहा शृङ्गार किसी गलियारे में,

शैशव के सपनों की चिता जहाँ जलती,
वहाँ उभरते यौवन का विश्वास क्या ?

कौन 'सूर' का पद तन्मयता से गुनता,
'मीरा' का 'गिरिधर' रोता बाजारों में,
चाँदी का पुतला तुलसी का पुरुषोत्तम,
भारतेन्दु है कैद मेघ-दीवारों में,

जो राधा की अस्मत से खिलवाड़ करे,
तुम्हीं कहो, उस मधुबन का विश्वास क्या ?

★

मेरे रचनाकार विधाता मुझे अविश्वासी मत समझो,
खुद साहिल से ब्याह रचा लो, मुझको बीच भँवर दे जाओ।

मेरा क्या मैं तो साधक हूँ,
बीच भँवर में भी रह लूंगा,
नयनों में सागर बिठला दो,
सारे दुख हँस-हँस सह लूंगा,

अग्नि-परीक्षा शेष रह गई हो तो वह भी पूरी कर लो,
खतम न हो जिस पथ की दूरी, मुझको वही डगर दे जाओ।

किसी भिखारी के गीतों-सा,
एक अधूरा मैं विहाग हूँ,
जिसमें हो वैधव्य झलकता,
माथे का ऐसा सुहाग हूँ,

मुझे अमावस की रजनी दो, खुद ले लो तुम पूरनमासी,
इस पर भी संतोष न हो तो, आकर स्वयं जहर दे जाओ।

शीतलता को क्षार कर सकूँ,
मैं ऐसी जलती उसाँस हूँ,
तुम मुझको पहचान न पाये,
इसीलिए कुछ-कुछ उदास हूँ,

लेकिन इतना सच कहता हूँ, मरा न मेरा अभी अहम् है,
मधुऋतु से तुम रिश्ता कर लो, और मुझे पतझर दे जाओ।

★

जीवन का अनुभव

मेरे जीवन का अनुभव कहता है,
जीवन का उपसंहार नहीं होता।

मुँहलगी प्यास यदि मुँह से लगी रहे,
तो व्यर्थ बरसना सचमुच सावन का,
शृंगार अधूरा शायद इस युग में,
अपमान हुआ करता है दर्पण का,

विज्ञापन के इस युग में कभी यहाँ,
आश्वासन का व्यापार नहीं होता।

सौ दीप जलाने से क्या होता है,
यदि मिटा न तेरे मन का अँधियारा,
जिसने केवल सुख के सपने देखे,
वह मानव सबसे बढ़कर दुखियारा,

तन के बहला लेने से ही केवल,
मन पर शाश्वत अधिकार नहीं होता।

हर पत्थर से लोहा छू जाने से,
वह कभी नहीं बन पाता है कंचन,
चरवाहों की वंशी बज जाने से,
हर कुंज नहीं बन जाता वृन्दावन,

केवल गंगा के तट पर बसने से,
हर नगर कभी हरिद्वार नहीं होता ।

★

गागर से कह देना

मेरे इन नयनों में सागर है छलक रहा,
अधिक नहीं छलके उस गागर से कह देना।

नारंगी किरणों ने ज्योंही कुछ रंग भरे,
इसी बीच सन्ध्या कुछ पर्दा-सा डाल गई,
नयनों का कोष अभी हुआ नहीं रीता था,
जामुनी बदरिया कुछ बूँद और डाल गई,

नयनों का कलश आज भरा-भरा लगता है,
अधिक नहीं बरसे उस अम्बर से कह देना।

शीशम की छाँह तले रिमझिम की बूँदों में,
नन्ही-सी विहगी है पाँखों को खोल रही,
प्रौढ़ा के यौवन-सी कटहल को डाल देख,
गदराई निमिया पर कोयलिया बोल रही,

जीवन का गठबन्धन युग-युग का होता है,
सपनों की सतरंगी भाँवर से कह देना।

कादम्बी छवि कभी नयनों में तिरती तो,
सुधियों का वृन्दावन लहराने लगता है,
जामुन की गदराई काया-सी चिकनाई,
देख जिसे अंग-अंग अगराने लगता है,

पलकों का इन्द्रधनुष छुपा नयन-बदली में,
साँस न मर जाये नट-नागर से कह देना।

★

सावन छाया नहीं

उसकी प्यास बुझा पाओ तो पुण्य है,
जिसकी पलकों में सावन छाया नहीं।

जादूगर सूरज का मोल तभी होता,
अगर द्वार पर बैठी डायन साँझ हो,
बादल का स्वागत होता उस आँगन में,
जिस आँगन की भोली मिट्टी बाँझ हो'

उसके घर न्योतो पाहुन मधुमास को,
जिसके मन का मधुबन लहराया नहीं।

उस गागर की बेचैनी का कहना क्या,
जिस गागर से पनघट ही नाराज हो,
गायक का स्वर अधरों पर उभरे कैसे,
रूठ गया जब उससे उसका साज हो,

उसके अधरों को गीतों का दान दो,
जिसके अधरों तक गायन आया नहीं।

मौसम का कुछ ऐसा पासा पलट गया,
हाटों में कंचन होता नीलाम है,
हर अनब्याही सुबह-साँझ में डूबी है,
बेकसूर सूरज होता बदनाम है,

उसको तुम सन्देह भरा काजल मत दो,
जिसके दृग का दर्पण मुसकाया नहीं।

★

मेरे मन का राजमहल जब सूना-सूना,
तुम्हीं कहो, फिर लुटा हुआ खँडहर क्या देगा ?

पलकों में छाया गीले सावन का मौसम,
अधरों पर आसीन गजब गमगीन उदासी,
आज निराशा मेरे घर मेहमान बनी है,
लगती है यह रात आज सचमुच विधवा-सी,

जो वसन्त की गठरी पर हो नजर लगाये,
तुम्हीं कहो, फिर वह लोभी पतझर क्या देगा ?

जादू भरी बाँसुरी की वह तान लुट रही,
वृन्दावन के स्वप्न सभी नीलाम हो रहे,
हर सरिता का यहाँ सिन्धु से गठबन्धन है,
इसीलिए पनघट सारे बदनाम हो रहे,

जब सरिताओं ने ही घूँघट डाल लिया हो,
तुम्ही बताओ, फिर खारा सागर क्या देगा ?

जब से नाता तोड़ लिया मैंने बगिया से,
सारा का सारा उपवन श्मशान बन गया,
थोड़ी-सी श्रद्धा अर्पित कर दी पाहन को,
आज देख लो, वह सचमुच भगवान बन गया,

जो उधार ली गई रोशनी से जलता हो,
तुम्हीं कहो, फिर वह भिक्षुक हिमकर क्या देगा ?

★

सरगम से कह देना

अनजाने अधरों पर गीत उभर आये,
चुपके प्राणों के सरगम से कह देना।

जरा बंसरी की तानों के स्वर उभरे,
लहराती यमुना ने घूँघट डाल लिया,
मेरे मन के मन्दिर में जाने किसने,
अनजाने सुधि का दीपक है बाल दिया,

वंशी की धुन पर यदि यमुना लहराए,
चुपके गीतों के संगम से कह देना।

पनघट-पनघट छाई अगर उदासी हो,
खोया-खोया हो सुधियों का वृन्दावन,
नयनों में जलजात आँसुओं का फूले,
अन्तर में हो बिकल व्यथाओं का क्रन्दन,

आँखों का आकाश अश्रु यदि बरसाये,
चुपके पलकों की शबनम से कह देना।

मन की मुरली टेर बटोही उसी जगह,
जहाँ मिलन की बजी नहीं हो शहनाई,
साँसों का विश्वास न करना कभी यहाँ,
कब रुक जाये पता नहीं यह हरजाई,

अगर चाँदनी घूँघट डाले शरमाए,
चुपके नयनों के पूनम से कह देना।

★

जब अन्तर से

१०

जब अन्तर से कोई साँस सिसकती निकले,
तुम अधरों को सीकर उन्हें दफन कर देना।

जिन आँखों में आँसू का सागर लहराए,
उन पलकों को सपनों की सौगात न देना,
जो पागल हो जाते चंदा की डोली पर,
उन गीतों को पूनम वाली रात न देना,

यदि चौराहे पर गीतों का मिले जनाजा,
उनके शव पर आँचल फाड़ कफन धर देना।

गाँठ लुटी जिस बचपन की हो यौवन-तट पर,
रीती-रीती रहती उसकी प्रीत-गगरिया,
रात सुहागन, विधवा बन कर जब रोती हो,
कैसे हँस पायेगी उसकी नेह-नगरिया,

निंदियारी आँखों का जो काजल रोता हो,
तो तुम छलिया का बस एक सपन भर देना।

भिक्षुक गीत अगर रोते हैं तो रोने दो,
उनके पग में सोने की जंजीर न बाँधो,
जिस आँसू का जन्म नयन की गोदी से है,
उस पर नयनों के तरकश का तीर न साधो,

बंदी आँसू यदि नयनों से ढुलक पड़ें तो,
पलकों से तुम छूकर उन्हें रतन कर देना।

★

आँसू की डोली

आँसू की डोली लुटी निठुर बटमारों से,
फिर बोलो, इन नयनों के तट का क्या होगा ?

साँसों की आँधी आज बह गई उल्टी है,
कुछ ठगी-ठगी लग रही कंठ की कोयलिया,
जब आँखों में हो नील समुन्दर लहराता,
फिर कैसे रुनझुन बजे प्रीत की पायलिया,

सरगम का मानसरोवर ही जब सूख चले,
फिर बोलो, गीतों के पनघट का क्या होगा ?

बुजदिल शूलों ने ऐसे जादू कर डाले,
हो गई सहज भोली कलियों की बदनामी,
जो गीत बने थे बादशाह लाखों दिल के,
बाजारों में होती बेमौसम नीलामी,

आँसू की हाटों में बिकते हों गीत जहाँ,
फिर बोलो, सपनों के मरघट का क्या होगा ?

पहचान राह की हो मत जाये मानव को,
इसलिए विधाता ने मौसम प्रतिकूल किया,
वह 'सत्' का सुमन हाथ में कहीं न आ जाये,
इसलिए, फूल के आँचल में भर शूल दिया,

पर, 'तत्त्व-तत्त्व' मिल कर जब एकाकार बने,
फिर बोलो, पलकों के घूँघट का क्या होगा ?

मन का सौदागर जबतक रहता परदेशी,
अलसाई आँखों के सपने रहते क्वाँरे,
घायल निंदिया दिन-रात बिलखती रहती है,
बैरी बनकर ताना मारा करते तारे,

कान्हा की वंशी से राधा को चिढ़ होवे,
फिर बोलो, तब उस वंशीवट का क्या होगा ?

★

ताजमहल क्या है

तुम मेरे मन को गीत सुनाने के पहले,
सागर की लहरों से पूछो हलचल क्या है ?

रोदन क्या जाने मुसकानों की भाषा को,
अम्बर क्या जाने सीमाहीन पिपासा को,
जो कफन उढ़ाया करते अपनी चाहों को,
क्या जानें सपनों की आकुल परिभाषा को,

अपने आँसू का ब्याह रचाने के पहले,
सपनों से पूछो, सुख का ताजमहल क्या है ?

मेरे गीतों की दुनिया आज उदासी है,
पनघट सूना, हर दृग की गागर प्यासी है,
पापिन अँधियारी हर दरवाजे घूम रही,
इसलिए आज मन का पाहुन संन्यासी है,

लुटती साँसों को कफन उढ़ाने के पहले,
तुम चाँद-सितारों से पूछो, आँचल क्या है ?

बोलो सागर का कोष हुआ कब रीता है,
चातक का जीवन कहाँ चैन से बीता है,
सूरज की लुटती साँसों के हिंडोले में,
मानस का यह कपटी अँधियारा जीता है,

तुम नयनों में पतझार बसाने के पहले,
पलकों के सावन से पूछो, बादल क्या है ?

★

ऐसा गीत सुनाओ

ऐसा गीत सुनाओ गायक बरस पड़े आकाश,
आँगन में बाजे शहनाई, मधुवन में हो रास।
फिर मुरली-स्वर गूँजे,
छलके गीतों की कालिन्दी,
नयन बने जामुनी-बदरिया,
भाल जड़ी हो बिन्दी,
घूँघट-घूँघट चाँद छुपा हो, पलकों में मधुमास,
आँगन में बाजे शहनाई, मधुबन में हो रास।
दीप जला आरती उतारे–
गीतों की बनजारिन,
पनघट-पनघट रास रचाए,
गोकुल की पनिहारिन,
हर कान्हा की वंशी कूके, हर राधा के पास,
आँगन में बाजे शहनाई, मधुबन में हो रास।
बने गुलाबी गाल प्रात का,
सन्ध्या बने सिंदूरी,
नयनों के जलजात खिलें–
फिर, लेकर गंध कपूरी,
जब-जब लहरे सबुज चुनरिया, बहे पवन उनचास,
आँगन में बाजे शहनाई, मधुबन में हो रास।

★

जब-जब चाहा तुझ तक गीत सुनाने आऊँ,
निष्ठुर जग के कारण कोसों दूर हो गया।

इतना मुझे सताया इस पापी दुनिया ने,
अधरों के ये खुले द्वार भी बन्द हो गये,
मेरे गीत-गीत में तेरे प्राणों का स्वर,
तूने जो गाया, नयनों के छंद हो गए,

मन की वीणा रात-रात भर रही सिसकती,
इसीलिए रोने को मैं मजबूर हो गया।

शासक पतझर ने सौ बार चमन को लूटा,
लेकिन, किसी सदय ने इसको नहीं सजाया,
मानसरोवर के तट का वासी होकर भी,
जब भी पाया अपने को प्यासा ही पाया,

जग ने मेरी साधों को काजल से ढाँका,
किन्तु, वही काजल सहसा सिन्दूर हो गया।

मिला चाँदनी का मुझको इक बार निमंत्रण,
किन्तु, अमावस को यह छोटी बात खल गई,
बिठा दिया चंदा के दरवाजे पर पहरा,
लेकिन, अपने-आप बावली रैन ढल गई,

सचमुच, अपने जीवन पर अचरज होता है,
होता था बदनाम, मगर मशहूर हो गया।

★

जीवन के इस विकट पंथ में चाह रहे हो खरा उतरना,
फूलों का सब मोह त्याग कर तुम जलते अंगार माँगना।
जिसने दुःख के स्वप्न न देखे,
वह सबसे बढ़कर दुखियारा,
जब तक स्याह न पी डालोगे,
आयेगा कैसे उजियारा,
बिन झंझा-वर्षा के इन्द्रधनुष का उगना कभी न सम्भव,
पहले पथ के काँटे चुन लो, फिर फूलों का हार माँगना।
पाने की अभिलाषा त्यागो,
पहले अर्पित करना सीखो,
जीवन स्वयं निमंत्रण देगा,
पहले परहित मरना सीखो,
ऊँची चोटी पर चढ़ने को नीचे से चढ़ना होता है,
आँसू से परिचय तो कर लो, फिर गंगा की धार माँगना।
अरुणोदय के पहले नभ का—
शासक रहता अन्धकार है,
जीवन को जो कला बना ले,
निस्सन्देह, वह कलाकार है,
भावुकता के वशीभूत हो, ऐसी कुछ अनहोनी मत कर,
पहले उर के साज सजा लो, फिर स्वर का मल्हार माँगना।

★

जाने किसने टोना मार दिया मेरी आँखों को,
चौराहे पर खड़ा मुक पर, मिलती राह नहीं है।
मैं ऐसा सरगम हूँ, जिसके—
स्वर सारे अनगाये,
अभी हवा बिल्कुल उदास,
फिर, पाती कौन पठाये,
मेरी किस्मत की किश्ती को ऐसा मिला किनारा,
थाह लगाने पर भी जिसकी लगती थाह नहीं है।
हाटों में उजड़े सुहाग की,
होती यहाँ सगाई,
पैसों की झनकारों पर,
बिक जाती है तरुणाई,
दुनिया अपनी बेरहमी से बाज नहीं है आती,
फिर भी, इस पगले मन को इसकी परवाह नहीं है।
यह गँवार संसार भला–
मेरी पीड़ा क्या जाने,
घायल मन की घायल कथनी–
को, घायल पहचाने,
मेरा मोल आँकनेवालो मैं ऐसा तरुवर हूँ,
मुझसे सबको छाँह मगर खुद मुझको छाँह नहीं है।

★

तुमसे एक निवेदन मेरा पंथ निहारा करना,
जाने कब यह राख देह की तुमको अंग लगाये ।

माना, आँखों में आँसू की बहुत दिनों से है पहुनाई,
जीवन की हर सोन-किरन की सन्ध्या के सँग हुई सगाई,
बहुधा जीवन में ऐसी घड़ियाँ भी आतीं बार-बार हैं,
जिस कर ने सिन्दूर दिया था, उसी हाथ ने चिता सजाई,

कफन न मिल पाया तो क्या है, गीत सुनाते जाना,
शायद तेरे गीतों का आँचल मुझको ढँक जाये ।

शंका में डूबा था बचपन आँसू में क्वाँरी तरुणाई,
कहने को तो मीत सभी थे, सबने मेरी हँसी उड़ाई,
मैंने चाहा जब जीवन के मधुबन में मुसकान लुटाना,
निष्ठुर दुनिया से केवल आँसू की मुझको मिली विदाई,

पलक बन्द कर लेना पर, कानों को खोले रहना,
शायद कोई पवन-बटोही आकर तुम्हें बुलाये ।

जीवन क्या है, और नहीं कुछ, साँसों का खाली पिंजरा है,
कभी जवानी की धड़कन है, कभी सिसकती शुष्क जरा है,
साँसों की पालकी यहाँ पर रोज उजड़ती, रोज सँवरती,
ऐसा फूल न देखा मैंने जो पतझर में नहीं झरा है,

तेरी आँखों की गंगा पर मुझको बहुत भरोसा,
ऐसा कहीं न हो यह पंछी प्यासा ही उड़ जाए।

★

फागुनी बयारों में,
खिलते कचनारों में,

रह-रह कर उभर रही सोयी-सी याद है।

याद, कुसुम-कन्या-सी रह-रह कर उभर रही,
पलकों पर बिखर रहे आँसू ये पारे-से,
हल्की-सी पुरवाई नेह-डोर बाँध रही,
दृष्टि-परी उलझ रही चुपके ध्रुवतारे से,

साँझ के धुँधलकों में,
बौराई पलकों में,

जाने क्यों उमड़ रहा सोया अवसाद है।

पाकड़ की फुनगी पर बोल रहा वनपाखी,
लजवंती सन्ध्या है बँसवड़ से झाँक रही,
चंदा का टीका औ' तारों की झालर ले,
स्वप्न-परी रजनी के माथे पर टाँक रही,

दृग का ले नीलापन,
मेरा यह भावुक मन,

सुधियों के पृष्ठों पर करता अनुवाद है।

सुधि के विस्तृत वन में भटक रहा मन ऐसे,
जैसे हो पंथ कोई चरवाहा भूल गया,
अन्तर की जिज्ञासा मन ही मन मुरझ गई,
बिना खिले जैसे हो मुरझा कोई फूल गया,

सुख के भिनसारों से,
दुख के अँधियारों से,

मेरा मन सुख-दुख का सुनता संवाद है।

★